

“शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिक चेतना विकसित करना है”

डॉ.दौलत सिंह कोठारी

प्राप्ति: 11.01.26
स्वीकृत: 02.03.26

03

अमिता वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, (समाजशास्त्र विभाग)
श्रीमती बी डी जैन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, आगरा
ईमेल: vermaajay586@gmail.com

परिचय

दौलत एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है ‘धन’, ऐसा प्रतीत होता है जैसे दौलत सिंह कोठारी का नाम दूरदर्शिता के साथ रखा गया हो, क्योंकि वह अपने राष्ट्र के लिए एक महान सम्पत्ति साबित होने वाले थे। दौलत सिंह कोठारी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कोठारी एक महान वैज्ञानिक ही नहीं बल्कि एक शिक्षाविद, प्रशासक, राष्ट्र निर्माता, नैतिक विचारक भी थे।

दौलत सिंह कोठारी का जन्म 6 जुलाई 1906 को राजस्थान के उदयपुर जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री फतेह कोठारी था, जो एक शिक्षक थे और जब वह 12 वर्ष के थे उनके पिता का देहांत प्लेग बीमारी के कारण हो गया। उनकी मां लहरबाई ने तीन भाइयों के साथ उन्हें कड़ी कठिनाइयों से पाला।

दौलत सिंह कोठारी की प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर राजस्थान में हुई। उनके परिवार में शिक्षा, अनुशासन आदि का महत्वपूर्ण स्थान था अतः बचपन से ही उनमें अनुशासन, अध्ययनशीलता और तार्किक सोच की भावना विकसित की। प्राथमिक स्तर से ही वह गणित और भौतिकी में गहरी रुचि रखते थे। माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने राजपूताना कॉलेज अजमेर (वर्तमान में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय का हिस्सा) में प्रवेश लिया वहां उन्होंने बी.एस.सी की पढ़ाई की और गणित और भौतिकी में विशेष योग्यता प्राप्त की। बी.एस.सी के उपरांत कोठारी ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से एम.एस.सी भौतिकी में प्रवेश लिया और वे सन् 1928 में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए। एम.एस.सी. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने के उपरान्त वह छात्रवृत्ति प्राप्त करके केंब्रिज विश्वविद्यालय गए वहां उन्होंने विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक राल्फ फाउलर के निर्देशन में शोध कार्य प्रारंभ किया। उनका शोध विषय था – “Statistical Thermo dynamics and properties of math matter” यह शोध अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुआ। उन्होंने प्रसिद्ध वैज्ञानिक रदरफोर्ड के सान्निध्य में 1933 में “Mathematical theory of Electrical Discharges & glow lamps” नामक शीर्षक से अपनी पी.एच.डी उपाधि प्राप्त की। 1933 में कोठारी भारत लौटे और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी में प्रदर्शक के पद पर कार्य करने लगे इसके उपरान्त उन्होंने दिल्ली में विश्वविद्यालय में

भौतिकी के प्राध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला और उनके नेतृत्व में सैद्धांतिक भौतिकी का अध्ययन और अनुसंधान उच्च स्तर पर पहुंचा बाद में वे भौतिकी विभाग के अध्यक्ष बने।

कोठारी ने जीवनपर्यन्त महत्वपूर्ण पदों पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया। उन्होंने यह दिखाया कि केवल दाब द्वारा परमाणुओं को आयनित किया जा सकता है। उन्होंने बहुत से शोधपत्र छपवाए और पुस्तकें लिखी जो कई भाषा में प्रकाशित हुयी। इस प्रकार दौलत सिंह कोठारी जीवन भर उच्च पदों पर रहे और 1983 में उनका स्वर्गवास हो गया। 1911 में उनके सम्मान में स्टाम्प पेपर निकाला गया।

डॉ. कोठारी की वैज्ञानिक शिक्षा में पहल

कोठारी ने भारतीय रक्षा विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने गैसों के आणविक बलों, उष्मागतिकी, सांख्यिकीय यांत्रिकी तथा उनमें सैद्धांतिक विषयों पर महत्वपूर्ण कार्य किए।

शिक्षा में प्रमुख पहल

डॉ. दौलत सिंह कोठारी को शिक्षा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया, जिसने भारत की शिक्षा नीति में ऐतिहासिक सुधार हेतु सुझाए दिये।

डॉ. कोठारी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968' का निर्माण किया। ये भारतीय विज्ञान कांग्रेस और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के प्रमुख भी रहे। इसके साथ ही उन्होंने –

- तकनीकी शब्दावली आयोग और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली में कुलाधिपति भी रहे।
- वह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अध्यक्ष पद पर भी आसीन रहे, और अपने कार्यकाल में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने हेतु कई दूर दृष्टिपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की।
- डॉ. कोठारी ने एन.सी.ई.आर.टी. की स्थापना और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज कार्यक्रम (बाद में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज कार्यक्रम) को शुरुआत की, जो भारत के युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुई।

डॉ. कोठारी को प्राप्त प्रमुख सम्मान

- पद्म भूषण (1962): भारत सरकार द्वारा उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया था।
- पद्म विभूषण (1973): उन्हें भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मनित किया गया था।
- शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (1966): यह पुरस्कार उन्हें भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा दिया गया था।
- मेघनाद साहा पदक (1978): यह सम्मान उन्हें भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा प्रदान किया गया था।
- आत्माराम पुरस्कार (1990): केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा यह पुरस्कार दिया गया था।

दौलत सिंह कोठारी और समाज में नैतिक शिक्षा

दौलत सिंह कोठारी ने समाज के उत्थान हेतु न केवल शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया अपितु तर्कशास्त्र के आधार पर मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता में सामाजिक जिम्मेदारियों के महत्व को भी समझाया।

कोठारी ने मानव को सर्वोच्च माना उनका मन ना था कि हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों में सत्यता का पालन करना चाहिए और उनके अनुसार सभी धार्मिक, सांस्कृतिक और सैद्धांतिक आदर्शों के मूल में मानव ही है।

कोठारी व्यक्तिगत लाभ से परे, अपने आसपास की दुनिया को एकजुट करने तथा आत्म अनुशासन के साथ घर, समाज और अपने समुदाय में सुख शांति हेतु योगदान देना व्यक्ति का कर्तव्य मानते थे। उनकी यह सोच आज की सरकार के "सबका साथ, सबका विकास" जैसे संदेशों में भी परिलक्षित होती है।

दौलत सिंह कोठारी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को केवल सुविधा या शक्ति के रूप में नहीं देखा बल्कि इसको मानव कल्याण का साधन माना। दौलत सिंह कोठारी यहां तक कहते हैं कि यदि कोई देश बृहद वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमताएँ विकसित कर भी ले तो भी नैतिक मूल्यों के बिना ये क्षमताएँ समाज की उन्नति में सहायक होने की बजाय हानि पहुंचा सकती है।

कोठारी का मानना है कि नैतिकता एक वह दिशासूचक है, जिसके द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी को दिशा प्रदान करनी चाहिए। इसे हम एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं जैसे 'क्षमता' आशय हम क्या-क्या कर सकते हैं। 'विवेक पूर्ण चिंतन' आशय हमें क्या यह करना चाहिए अर्थात् यह करना सही है या गलत मानव क्लोन बना सकते हैं (क्षमता) मानवता के लिए यह खतरा बन सकता है इसलिए बनाने की अनुमति नहीं प्रदान की गयी। (विवेकपूर्ण चिंतन) इस प्रकार उन्होंने बताया कि सिद्धांत विज्ञान, रक्षा विज्ञान, और शिक्षा में एक मौलिक नैतिकता है, उसको अनदेखा नहीं किया जा सकता इसलिए दौलत सिंह कोठारी कहते हैं शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य सिर्फ कौशल और ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण सामाजिक दायित्व, मानव कल्याण, और नैतिक जागरूकता का विकास करना है। इसी प्रकार रक्षा विज्ञान, विज्ञान- प्रौद्योगिकी के उपयोग में नैतिक विवेचन महत्वपूर्ण है। इसी आधार पर सुरक्षा नीति, रक्षा नीति और परमाणु नीति बनी है अर्थात् हमारे पास परमाणु बम है परंतु उसका प्रयोग नैतिक आधार पर किया जाएगा। इस प्रकार दौलत सिंह कोठारी ने अपने सभी विचारों से शैक्षिक हो या वैज्ञानिक दृढ़ संकल्पित मौलिक, नैतिक मूल्य से सुसज्जित राष्ट्र समाज निर्माण की बात की।

दौलत सिंह कोठारी : शिक्षा-जगत के आधुनिक ऋषि

दौलत सिंह कोठारी को आधुनिक भारतीय शिक्षा जगत का ऋषि कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना और राष्ट्र निर्माण का आधार माना। उनका दृष्टिकोण समयोचित, व्यापक और दूरदर्शी था। वे मानते थे कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान या परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी में सृजनात्मकता, वैज्ञानिक सोच, विवेक और नैतिक मूल्यों का विकास करना है।

कोठारी ने शिक्षा को आधुनिक समाज और वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में देखा। उनके अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को स्वावलंबी, जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनाया है। उन्होंने शिक्षकों के महत्व पर विशेष बल दिया और कहा कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन के आदर्श प्रस्तुत करने वाला भी होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों में जिज्ञासा, प्रयोगशीलता और आत्मविश्वास पैदा करने पर जोर दिया, ताकि वे समस्याओं का तार्किक समाधान ढूँढ़ सकें और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें।

दौलत सिंह कोठारी न केवल विचारक और शिक्षक थे, बल्कि समाज सुधारक और मार्गदर्शक भी थे। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से यह संदेश दिया कि ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की उन्नति है। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जब ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखना आधुनिक शिक्षा का सबसे बड़ा लक्ष्य है। इस दृष्टि से उन्हें भारतीय शिक्षा जगत का आधुनिक ऋषि कहना स्वाभाविक है।

दौलत सिंह कोठारी का विज्ञान में योगदान

दौलत सिंह कोठारी विज्ञान के छात्र थे। उन्होंने एम.एस.सी भौतिकी प्रथम श्रेणी के साथ सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उन्हें देश के महान वैज्ञानिकों डॉ. मेघनाथ साहा, डॉ. एन आर धर का सानिध्य मिला। वह शोध हेतु लंदन गए उन्हें ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दाखिला मिला परंतु वह केब्रिज वि.वि. में जाना चाहते थे क्योंकि वहां बेहतर शोध चल रहे थे। एक दिन वह अपने मित्र गुलाम अली वोहरा के साथ केम्ब्रिज विश्वविद्यालय घूमने गए जहां उनकी मुलाकात लाइब्रेरी में प्रसिद्ध वैज्ञानिक रदरफोर्ड से हुयी। कोठारी ने हिचकिचाते हुए पूछा 'सर प्रोफेसर मेघनाथ साहा ने आपको मेरे बारे में लिखा होगा' रदरफोर्ड बोले हाँ मैं तुम्हारी ही पर्ची पढ़ रहा हूँ मेरी सेक्रेटरी तुम्हारा दाखिले में मदद कर देगी प्रक्रिया पूर्ण हुई और कोठारी केम्ब्रिज शोध टीम में सम्मिलित हुये। भारत आकर वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डिमॉस्ट्रेटर नियुक्त हुए। डा० दौलत सिंह कोठारी का विज्ञान के क्षेत्र में योगदान बहुआयामी था, जिसे निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

रक्षा विज्ञान – दौलत सिंह कोठारी को रक्षा विज्ञान के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। यह रक्षा मंत्रालय में रक्षा मंत्री के प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार बने (1948– 61) डी०आर०डी०ओ० की नींव रखने में और उससे संबंधित प्रयोगशाला की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने रक्षा उपकरणों और कवच प्रणाली के डिजाइन में अहम्-भूमिका निभाकर रक्षा प्रणाली को सुदृढ़ और सशक्त बनाया। उन्हीं की प्रेरणा से तोप, बंदूके, रडार और बैलेस्टिक उपकरणों पर अनुसंधान प्रारंभ हुआ। उन्हीं के निर्देशन में रक्षाधातु-कर्म, प्रयोगशालाएँ स्थापित हुईं। इस अनुसंधान से भारत में हल्के-मजबूत गोला रोधी कवच के डिजाइन की नींव पड़ी।

डॉ० दौलत सिंह कोठारी ने अपने ग्रंथ "न्यूक्लियर एक्सप्लोजन एंड द देयर इफेक्ट" में परमाणु विस्फोट से होने वाले नकारात्मक प्रभाव तथा किस प्रकार विज्ञान को प्रयोग किया जाता है पर जोर दिया जाता है। परमाणु विस्फोट विनाशकारी तो है ही साथ में इससे हमारे समाज का प्रत्येक क्षेत्र जैसे राजनीतिक, सामाजिक और पर्यावरण सभी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, उन्होंने हिरोशिमा व नागासाकी पर हुए परमाणु बमबारी के तत्कालीन व दीर्घ कालीन दुष्परिणामों का वर्णन

किया; और अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया। साथ ही इन्होंने सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थी और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए खतरे का विश्लेषण किया इस प्रकार कोठारी ने वैश्विक परमाणु युद्ध के वैश्विक खतरे के बारे में चेतावनी दी।

दौलत सिंह कोठारी और शिक्षा

दौलत सिंह कोठारी उत्कृष्ट वैज्ञानिक के साथ एक महान शिक्षाविद् भी थे। प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक भारतीय शिक्षा के पूरे स्पेक्ट्रम में उनका योगदान सर्वविदित है। कोठारी का मानना था शिक्षा से विशेषतः वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा, राष्ट्रीय विकास और समृद्धि से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। शिक्षा के माध्यम से ही लोगों के भौतिक जीवन स्तर व गुणवत्ता को समृद्ध किया जा सकता है। शिक्षा से ज्ञान, कौशल में सुधार और व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण का विकास होता है। डा. कोठारी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान भारत के आधुनिक शैक्षिक ढांचे की नींव बनाने वाला माना जाता है। कोठारी का मानना था शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का मात्र एक साधन नहीं थी, बल्कि शिक्षा ने राष्ट्रीय विकास, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक समानता व न्याय से जोड़ने वाले नीति निर्माताओं को दिशा दी। शिक्षा राष्ट्र निर्माण के साधन के साथ संपूर्ण राष्ट्र को एक माला में पिरोने का कार्य करती है।

कोठारी का सबसे महत्वपूर्ण “एक योगदान सामान्य विद्यालय प्रणाली” का विचार था उक्त शिक्षा प्रणाली से उनका आशय था कि सभी बच्चों के लिए समान गुणवत्ता वाली प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करना ताकि शिक्षा में असमानता का ह्रास हो और अवसर की समानता की वृद्धि। इसका सीधा उद्देश्य यह था कि बच्चों के मध्य सामाजिक विभाजन, आर्थिक आधार पर होने वाले भेदभाव और शैक्षिक अलगाव कम हो।

महत्वपूर्ण बात यह थी कि कोठारी के विचार केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं थे अपितु उन्होंने शिक्षक प्रशिक्षण और सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधारने पर विशेष जोर दिया इन्होंने शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों की मजबूती, प्रशिक्षण के मानवीकरण और शिक्षकों के वेतन व सीमाओं में सुधार के लिए व्यापक सिफारिशें दी।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964–1966 (कोठारी कमीशन)

भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूलचूक परिवर्तन के लिए भारत सरकार ने दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में 14 जुलाई 1964 को कोठारी कमीशन का गठन किया गया। इस आयोग को राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के नाम से जाना गया यह एक तदर्थ आयोग था। दौलत सिंह कोठारी इस समय यू.जी. सी के भी अध्यक्ष थे। शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक रूप से परिवर्तन हेतु यह प्रथम गठित आयोग था। यह आयोग 20 सदस्यों का समूह था। इस आयोग ने भारत से बाहर ब्रिटेन, जापान, अमेरिका, फ्रांस, स्वीडन के 20 विदेशी सलाहकारों के एक पैनल से भी परामर्श लिया यह सभी शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ थे। इस प्रकार कोठारी आयोग ने 29 जून 1966 को तत्कालीन शिक्षा मंत्री एम.पी. चावला को अपनी रिपोर्ट सौंपी।

नीचे कोठारी कमीशन (1964–66) की उद्देश्यों को प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा के आधार पर बाँटा गया है –

1. प्रारंभिक शिक्षा (Primary Education)

- शिक्षा को जीवन-अनुभव एवं उत्पादक गतिविधियों से जोड़ना – जैसे कि बच्चों को काम-अनुभव (work-experience) देना।
- शिक्षा में विज्ञान, गणित को प्रारंभिक स्तर से शामिल करना (प्रथम दस वर्षों में)।
- सभी बच्चों को – चाहे सामाजिक, आर्थिक, क्षेत्रीय रूप से पिछड़े हों – समान अवसर देना।

2. माध्यमिक शिक्षा (Secondary Education)

- माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को व्यावसायिक-उन्मुख (vocationalised) बनाना, ताकि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ कौशल भी प्राप्त कर सकें।
- माध्यमिक शिक्षा में अनुसंधान, पाठ्यक्रम सुधार, शिक्षण-पद्धति में आधुनिकता लाना।
- उच्चतर माध्यमिक (Class 11-12) को दो वर्ष की अवधि के रूप में विशेष रूप से विकसित करना।

3. उच्च शिक्षा (Higher Education)

- विश्वविद्यालयों में नया ज्ञान खोजने, शोध करने तथा उच्च-शिक्षा को उन्नत बनाने पर बल देना।
- उच्च शिक्षा में चयन-आधारित प्रवेश, पाठ्यक्रम-सुधार, शिक्षण-प्रणाली में गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- उच्च शिक्षा को ऐसे स्वरूप देना कि वह देश की आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

कोठारी आयोग ने शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु अपनी 23 से सिफारिशें दी।

कोठारी कमीशन के निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिफारिशें हैं

1. कोठारी कमीशन की सिफारिश पर राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्रणाली को 10+2+3 पैटर्न के अनुरूप बनाया गया।
2. निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान अर्थात् 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए।
3. कोठारी आयोग ने क्षेत्रीय भाषाओं, संस्कृत के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय भाषाओं, अधिमानतः अंग्रेजी को बढ़ावा देने की सिफारिश की।
4. आयोग ने राज्य स्तर पर भाषा सूच्य अपनाने की सिफारिश की। इसका उद्देश्य हिंदी भाषा राज्यों में दक्षिणी राज्यों की एक भाषा को बढ़ावा देना था। इसका उद्देश्य गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी अंग्रेजी और एक क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देना था।
5. यह आयोग शिक्षकों के लिए अनुकूल और पर्याप्त सेवा शर्तें उपलब्ध कराने तथा उन्हें अपने निष्कर्षों को प्रकाशित करने और संचालित करने के लिए आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान करने की सिफारिश की।

6. विज्ञान में गणित किसी भी राष्ट्र के विकास का अभिन्न अंग है, इसलिए कोठारी आयोग ने विज्ञान और गणित को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की सिफारिश की थी।
7. सामाजिक न्याय को दृष्टिगत रखते हुए कोठारी आयोग ने बालिका शिक्षा, पिछड़े वर्गों की शिक्षा, जनजाति लोगों की शिक्षा, शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।
8. आयोग ने स्नातकोत्तर स्तर के अनुसंधान प्रशिक्षण, पर्याप्त पुस्तकालयों, प्रयोगशाला और धन उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान देकर विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा में सुधार के सिफारिश की।

डॉ० कोठारी और राष्ट्रनिर्माण – दौलत सिंह कोठारी का प्रत्येक कार्य राष्ट्रहित और राष्ट्रवाद से प्रेरित था उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके शिक्षित, नैतिक और जागरूक नागरिकों में निहित होती है। उनके विचारों में राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता या आर्थिक विकास तक सीमित नहीं था। बल्कि यह सांस्कृतिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों के समग्र विकास से जुड़ा हुआ था। कोठारी विज्ञान और प्रौद्योगिकी, शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में सदैव प्रयासरत रहे, उनका मानना था कि भारत को विकसित राष्ट्र बनने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा और विज्ञान को जनजीवन से जोड़ना होगा और उन्होंने इसे “वैज्ञानिक राष्ट्रवाद” कहा। इस प्रकार उन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शिक्षा को राष्ट्र की प्रगति का आधार माना गया।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण उनके इस वाक्य में था – “वे मानते थे कि राष्ट्र का भविष्य शिक्षक शिक्षार्थी के नैतिक एवं बौद्धिक विकास पर निर्भर करता है।”

कोठारी का राष्ट्रवाद मानवता और नैतिकता से ओत-प्रोत था। वे किसी अक्रामक राष्ट्रवाद के समर्थक न होकर उनके लिए राष्ट्र निर्माण का अर्थ था— समाज में समानता, न्याय, बंधुत्व और अनुशासन की भावना का प्रसार। वे शिक्षा के माध्यम से ऐसी पीढ़ी तैयार करना चाहते थे जो न केवल कुशल वैज्ञानिक और नागरिक बने, बल्कि जिम्मेदार संवेदनशील देशभक्त बने। कोठारी गहराई से गांधीवादी मानवतावाद और नेहरूवादी वैज्ञानिकता से प्रभावित थे। उनका मानना था कि भारत जैसे विविधता वाले देश में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता की भावना का निर्माण है। कोठारी इस प्रकार राष्ट्रनिर्माण को सतत प्रक्रिया माना, जिसमें प्रत्येक नागरिक की भूमिका होती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि डॉ० कोठारी का राष्ट्र निर्माण दृष्टिकोण समानता वैज्ञानिकता और नैतिकता पर आधारित था। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र की आत्मा माना और भारत को आधुनिक, आत्मनिर्भर और प्रगति की दिशा में अग्रसर करने में अद्वितीय योगदान दिया।

निष्कर्ष

डॉ. दौलत सिंह कोठारी भारतीय विज्ञान जगत के प्रतिभाशाली वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपने ज्ञान, दृढसंकल्प, समर्पण दूरदृष्टि से देश के वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक विकास की मजबूत नींव रखी। वे न केवल श्रेष्ठ भौतिक वैज्ञानिक थे, बल्कि एक दूरदर्शी शिक्षाविद् और कुशल प्रशासक भी थे। भौतिकी व रक्षा विज्ञान में उनके योगदान ने भारत को आत्मनिर्भर बनने में सहायता की। शिक्षा के

क्षेत्र में उनके नेतृत्व में गठित कोठारी कमीशन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में ऐतिहासिक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। इस कमीशन की सिफारिशों प्रभाव हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर भी दिखाई देता है। डॉ. कोठारी का जीवन सादगी, नैतिकता और राष्ट्रप्रेम से प्रेरित था। उन्होंने विज्ञान को केवल प्रयोगशाला तक सीमित न रखकर समाज की उन्नति का माध्यम बनाया, इसलिए इन्हें 'आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रमुख शिल्पी' और 'रक्षा विज्ञान का वास्तुकार' कहा जाता है। डॉ० कोठारी के योगदान ने भारत को न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना दिया। निःसंदेश डॉ. डॉ० एस० कोठारी का नाम भारतीय समाज, भारतीय विज्ञान और शिक्षा के इतिहास में उज्ज्वल नक्षत्र के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदर्भ

1. पचौरी, गिरीश 2021, समकालीन भारत एवं शिक्षा अनु पब्लिकेशन आगरा।
2. शर्मा, पराग (2022) बचपन से लेकर सम्मानों तक एक महान व्यक्तित्व दौलत सिंह कोठारी का ऐसा सफर; नवभारत टाइम्स; ऑनलाइन संस्करण।
3. पाठक, पी डी व त्यागी, जी एस डी; (2020) कोठारी कमीशन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
4. दत्ता, जयंती; 5 जनवरी 2024— अद्यतन (22 अप्रैल 2024), दौलत सिंह कोठारी: भारत की एक संपत्ति, साइंस इंडिया <https://scienceindiamay.in/>
5. शिक्षा और राष्ट्रीय विकास: शिक्षा आयोग रिपोर्ट (1964–66), भारत सरकार नई दिल्ली।
6. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) अभिलेख, डॉ. डी. एस. कोठारी का रक्षा विज्ञान में योगदान DRDO प्रकाशन – नई दिल्ली।
7. Kothari, D.S. (1988), ATOM & Self, Gandhi Book House, Gandhi Pees Foundation, New Delhi.
8. Ahmad, Firoz & Garg, Suresh. (2011), Forty years of Kothari Commission : Reforms and Reflections, Viva Books New Delhi.
9. Nuclear explosions and their effects (1956). The Publication Division, Min of Information and Broadcasting, Government of India, New Delhi.
10. D.S. Kothari. (1975), Science & Man, Indiana Publication, New Delhi.
11. Vatsyayan, Kapila. (2013), Dr. D.S. Kothari : A modern Rishi, Indian International Centre, New Delhi.
12. www.du.ac.in
13. Bharatdiscovery.org